Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

BHUMESH KUMAR[1], DR. MRITUNJAY SHARMA[2], PROF. ARUN KUMAR[3]

[1]Research Scholar, Deen Dayal Upadhyay Study Centre, Central University of Himachal Pradesh, Dharmshala, Himachal Pradesh
[2]Assistant Professor, Department of Performing Arts, Himachal Pradesh University, Shimla, Himachal Pradesh
[3]Chair Professor, Deen Dayal Upadhyay Chair, Central University of Himachal Pradesh, Dharmshala, Himachal Pradesh

सार

डॉ केशवराव बलीरम हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत विशेष रुप से उपयोग किया जाता है। जिसमें पथ संचलन के लिए घोष की रण थाप के साथ स्वयंसेवक पथ संचलन करते हैं। घोष रण संगीत का ही प्रतिरूप है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रारंभ होने के साथ ही घोष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में सम्मिलित किया गया। घोष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में स्वयंसेवकों में गुण निर्माण करने के लिए सम्मिलित किया गया जिसमें मुख्य रूप से स्वयंसेवक के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को केन्द्रित किया गया है। इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष का प्रयोग भी संयोग, संस्कार, संयोदर आदि भाव एवं स्वयंसेवकों का मनोबल बढ़ाने के लिए कार्य पद्धति का हिस्सा बना। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष का उद्देश्य स्वयंसेवकों में निरंतरता बनाए रखना है, सांघिकता, सामाजिक समरसता, सामूहिक जीवन शैली, नेतृत्व क्षमता, समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन तैयार करना, स्वयंसेवक को अनुशासन प्रिय बनाना है। प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संगीत, रणसंगीत, घोष, कार्य पद्धति, गुणवान, संस्कार, उत्साह, सांघीकता, वीरता, स्वयंसेवक, घोष वादक, शाखा, वाद्य, व्यक्ति निर्माण, देशभक्ति।

भूमिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1925 से व्यक्ति निर्माण के कार्य में लगा हुआ है। एक गुणवान, चरित्र संपन्न, अनुशासित, शारीरिक व मानसिक रूप से हृष्ट- पुष्ठ व स्वस्थ तथा अध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण व्यक्ति का निर्माण ही संघ कार्य का मुख्य अधिष्ठान है। नित्य प्रति की साधना के द्वारा ही यह कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में फलीभूत होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रारम्भ से ही संगीत को विशेष स्थान देकर उसे अपनी कार्य पद्धति में जोड़ा गया है। इसी संगीत को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष के नाम से जाना जाता है। घोष, रण संगीत का ही प्रतिरूप है। इसी के निमित्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रारंभिक काल से ही रण संगीत अर्थात घोष संघ की कार्य पद्धति में व्यक्ति निर्माण के लिए डॉ केशव बलिराम हेडगेवार तथा संघ के कार्यकर्तायों द्वारा संघ की कार्य पद्धति में जोड़ा गया। डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में 1925 में विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। स्वयंसेवकों के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए डॉ हेडगेवार ने नागपुर में मोहिते के बाड़े में संघ की पहली दैनिक शाखा प्रारंभ की। इसी शाखा में स्वयंसेवकों ने संघ घोष का अभ्यास प्रारंभ किया। संघ की शाखा रूपी साधना से तैयार हुए स्वयंसेवकों ने 1927 में पहला पथ संचलन घोष की रण थाप के साथ ऋग्वेद के संगठन मंत्र को साकार करते हुये। "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥" अर्थात कदम से कदम मिलाकर चलना, मनों में एक योग भाव लेकर संगठन रूपी योगिक देवी शक्ति का प्रदर्शन नागपुर महानगर में विजयदशमी के दिन किया था। इसी घोष

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

साधना को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी कार्य पद्धति में सम्मलित किया और आज भी इसे व्यक्ति निर्माण के कार्य में जारी रखा हुआ है।

शोध का महत्व

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। जिज्ञासा एवं नूतन ज्ञान प्राप्त करना उसकी मूल प्रवितियां रही हैं। । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष व्यक्ति में नई उमंग चेतना तथा उत्साह का संचार करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक संगठन है। संघ में घोष को भारतीय रागों तथा तालों के आधार पर रचनाएँ तैयार करके रण संगीत में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अत: इसी महत्वपूर्ण विषय को शोध के माध्यम से सामने लाकर तथा विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर संवेदनशीलता एवं गहनता से अध्ययन कर नवीन अनवेषणता का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र मुख्य रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन था। संगीत के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष के स्वरूप, बजने वाले वाद्य, सिखाने की विधि तथा घोष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में कब तथा कैसे जुड़ा तथा वर्तमान में इसके स्वरूप के अध्ययन रहा।

शोध का उदेश्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

संगीत

संगीत, गायन, वादन और नृत्य का संकलित रूप है। संगीत शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। सम्यक + गीतम् अर्थात अच्छी प्रकार गाया गया गीत, वाद्य तथा नृत्य की संगति से गीत अच्छा बनता है तभी तो कहा गया है:-

गीतम्, वाद्यम् च नृत्यम् त्रयम् संगीतमुच्यते'।[1]

संगीत कला ललित कलाओं में सर्वोच्च मानी गई है। भारतीय संगीत में स्वरों के समायोजन से विभिन्न रागों का निर्माण किया गया है। इन रागों के गायन-वादन से उत्पन्न विभिन्न ध्वनि तरंगों का प्रभाव मानव, पशु व प्रकृति पर पड़ता है। योगियों ने संगीत को नाद योग की संज्ञा दी है। ओंकार साधना जिसे संगीतकार षडज् साधना भी कहते हैं। नाद योग की उच्च स्तरीय साधना है। संगीत एवं योग शास्त्रों में नाद अर्थात ध्वनियों का विभाजन दो भागों में किया है, आहत व अनाहत नाद। आहत ध्वनि उसे कहते हैं जो किसी हलचल या अकराहट के कारण उत्पन्न होती है और कानों को स्पष्ट सुनाई पड़ती है। अनाहत उस ध्वनि को कहते हैं जो चेतना से उत्पन्न होती है अर्थात स्वयं-भू-ध्वनि प्रवाह जिसे परमब्रह्म को अनुभव में आ सकने वाला स्वरूप कह सकते हैं। लय और ताल में बंधे हुए स्वर प्रवाह को संगीत कहते हैं। यह स्वर प्रवाह गायन व वाद्य यंत्रों की ध्वनि संगीत में गिनी जा सकती है। ऊँ ध्वनि जैसे-जैसे अन्य तत्वों के क्षेत्र में होकर गुजरती है, वैसे ही उसकी ध्वनि में अंतर आता है। वंशी के छिद्रों में हवा फूकते हैं तो उससे एक ध्वनि उत्पन्न होती है, पर आगे छिद्रों में से जिस क्षेत्र में जितनी हवा निकाली जाती है उसी के अनुसार भिन्न-भिन्न स्वरों की ध्वनि उत्पन्न होती है। उसी प्रकार ऊँ ध्वनि भी विभिन्न तत्वों के संपर्क में आकर विविध प्रकार की स्वर लहरियों से परिणित हो जाती है इन स्वर लहरियों का सुनना ही नाद योग है। योग तरंगिणी में नाद के विषय में कहा है:-

1 संगीत रत्नाकर, पृ. 12

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

न नादेन बिना ज्ञानम् न नादेन बिना शिव:।

नादरूपम परम परम ज्योतिर्नाद रूपो परो हरि:॥[1]

अर्थात- नाद के बिना ज्ञान नहीं होता, नाद के बिना शिव नहीं मिलते, नाद के बिना ज्योति का दर्शन नहीं होता अतः नाद ही परम ब्रह्म है। योग साधना में नाद योग की अत्यधिक गरीमा है। अत: संगीत ही ऐसी कला है जो हमारी आंतरिक भावनाओं को संयमित एवं स्वस्थ बनाकर सामंजस्य पूर्ण सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति में घोष

घोष अर्थात रण संगीत अर्थात ध्वनि और यह ध्वनि ही संसार के सृजन की साक्षी है। महानाद ॐ से ही सृष्टि का जन्म हुआ है। शांति काल में घोष का प्रयोग संयोग, संस्कार एवं संयोदर जैसे भाव के निर्माण के लिए किया जाता है। युद्ध में घोष का प्रयोग अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने व दुश्मनों को मानसिक रूप से परास्त करने के लिए किया जाता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन ने देवदत्त व भगवान श्री कृष्ण ने पांचजन्य शंख का ऐसा उद्घोष किया कि पूरी कौरव सेना हृदय विदीर्ण हो गई। घोष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शारीरिक विभाग का महत्वपूर्ण अंग है। संघ में घोष का महत्व ठीक उसी प्रकार है, जैसे वीर के माथे पर तिलक। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष के अनेक तज्ञ वादकों द्वारा साधना परक लंबा व रोचक इतिहास है। संघ की स्थापना डॉ केशव बलीराम हेडगेवार द्वारा 1925 में की गई। प्रारंभ में खेल खेलने, अखाड़ों में मलखंब आदि का अभ्यास करना, परेड करने, योगासन का अभ्यास करने व देश भक्ति गीतों का अभ्यास करते थे। हिंदू समाज के संगठन जैसे उदात लक्ष्य को लेकर डॉक्टर साहब ने संघ की शाखा प्रारंभ की। शाखाओं में योगासन आदि अनेक शारीरिक कार्यक्रम के साथ परेड अर्थात संचलन का अभ्यास होता था। इसी निमित स्वयंसेवकों में उत्साह, उमंग, सांघीकता व वीरता जैसे गुणों के विकास के लिए संघ में स्वयंसेवकों की दृढ़ इच्छा शक्ति, लगन व कर्तव्य परायणता से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शारीरिक विभाग में घोष प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम 1927 के संचलन में स्वयंसेवकों द्वारा प्रणव (Base drum), शंख(Bugle) का प्रयोग किया गया। इस तरह से संचलन के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में रण संगीत अर्थात घोष वादन की परंपरा प्रारंभ हुई। जिसे स्वयंसेवकों ने अपने अथक परिश्रम व साधना से विकसित किया। संघ स्थापना के प्रारंभिक दिनों में डॉक्टर हेडगेवार जी के परिचित बैरिस्टर गोविंद राव देशमुख के सहयोग से सेना से सेवानिवृत्त बैंड मास्टर द्वारा स्वयंसेवकों का घोष प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। मार्तंड राव जोग प्रथम शंख वादक बने। पुणे के हरी विनायक दाते ने वंशी वादन कर प्रथम रचना "गणेश" का निर्माण किया और कर्नाटक के एक स्वयंसेवक ने शंख में "चेतक" रचना का निर्माण किया। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा बनाई गई लगभग 40 रचनाओं को भारत की नौसेना दल ने भी अपने ब्रास बैंड पर बजाया है।

सन 1982 में भारत में संपन्न हुए नौवें एशियाई खेलों के उद्घाटन सत्र में नौसेना दल ने रचना "शिवराज" का वादन किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष विभाग में अनेक वाद्यों का उपयोग किया जाता है। सभी वाद्यों की पृथक-पृथक रचनाएं बजाकर स्वयंसेवक कर्णप्रिय रण संगीत एवं वृंद संगीत का निर्माण करते हैं। संघ के घोष विभाग में वाद्यों में प्रणव (Base Drum), आनक (Side Drum), शंख (Bugle), तूर्य (Trumpet), गोमुख (Euphonium), स्वरद (Clarinet), नागांग (Saxophone) वंशी सीधी, वंशी आड़ी(वेणु), त्रिभुज, झलरी, घंटा आदि वाद्यों का उपयोग किया

[1] शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म, पृ. 4.11

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

जाता है। घोष हमेशा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पथ संचलन में ध्यान आकर्षित करता है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि कुछ प्रतिभाशाली संगीतकारों ने भारतीय धुनों पर आधारित मार्शल धुनों को रचने का काम किया है। संघ की परंपरा के अनुसार वे गुमनाम हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के प्रयत्नों से प्रत्येक वाद्य में अनेक रचनाओं का निर्माण हुआ। आज देश में 60 हजार से अधिक घोष वादक स्वयंसेवक होंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम अखिल भारतीय घोष शिक्षण प्रमुख श्री सुबू श्रीनिवासी ने 10 वर्षों तक पूरे भारत का प्रवास कर, निष्णात घोष वादक स्वयंसेवकों का निर्माण किया। घोष वादक स्वयंसेवकों के द्वारा अनेक प्रकार के शिविर, वर्ग भी आयोजित किए जाते रहे हैं। इसी क्रम में नवंबर 2005 में फुलगांव, पुणे में प्रथम अखिल भारतीय घोष प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। उसके पश्चात देशभर में अखिल भारतीय एवं प्रांत स्तर पर घोष शिविर होने लगे। वर्तमान में संघ में घोष प्रशिक्षण के दायित्व को संघ के अखिल भारतीय सह शारीरिक शिक्षण प्रमुख श्री जगदीश प्रसाद जी देखते हैं।

साहित्य समीक्षा

वन्हाडपांडे, बा.ना., (1995) ने अध्ययन में पाया कि डॉक्टर केशव बलीरम हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थापना की। कार्यपद्धति के रूप में शाखा प्रारम्भ हुई। शाखा में आने वाले स्वयंसेवकों के विकास के लिए दंड, खड़ग, शूल, योगचाप, खेल, योग जैसे साहसी और आत्मविश्वास बढ़ाने वाले कार्यक्रम सम्मलित किए गए। अनुशासन का संस्कार दृढ़ करने के लिए गणवेश पहनकर समता, संचलन आदि कार्यक्रम करने की पध्दति प्रारम्भ हुई। 1927 में प्रथम संचलन घोष की रण थाप के साथ नागपुर में निकला।

द्विवेदी, वीरेश्वर (1992) ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पथ संचलन अथवा विशेष समारोह में घोष का उपयोग पहले से होता चला आ रहा है, किन्तु संचलन, व्यायाम योग, ध्वजरोहण तथा अवतरण आदि के अवसरों पर ब्रिटिश गवर्नमेंट के समय से चले आ रहे मिलिट्री बैंड के मार्चेज का प्रयोग होता रहा। जब इस दिशा में मा. यादव राव जी द्वारा शास्त्रीय दृष्टिकोण से नए मार्चेज (गीतों) की रचना का आव्हान लिया गया, तो घोष का सम्पूर्ण खड़ा ढांचा बदल गया और आज उसे भारतीय संगीत का शास्त्रीय आधार प्राप्त हो चुका है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समाज के संगठन के कार्य में एक कार्यक्रम के नाते घोष विभाग द्वारा रणसंगीत का वादन प्रारम्भ किया गया। तीन पीढ़ियो के इस कला के उपयोग द्वारा अब उसका लगभग एक शास्त्र सा बन गया है। स्वाभाविक ही उसको सिखाने की अनेक पध्दतियों का उदय इस अनुभव में से अनुभव हुआ है"। तथा यह भी ज्ञात हुआ कि अनेक वर्षों से सरल पाठों की सोपान-पध्दति का उपयोग करते हुए इस पध्दति द्वारा हजारों की संख्या में विभिन्न वाद्यों के वादक तैयार किए जा चुके हैं। (6)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सामूहिक योग, व्यायाम, समता, संचलन, खेल आदि को विशेष प्राधान्य दिया गया है। सांघिक कार्यक्रम, सांघिक समता, संचलन आदि के साथ सुस्वर लयतालबद्ध घोष वादन प्रयोग करते आये हैं। दिसंबर 1926 में केवल एक शंख तथा एक ही आनक के साथ संपन्न हुए संघ के प्रथम पथ-संचलन से आनंद और गौरव की अनुभूति अवश्य हुई थी। अब तक संघ ने न केवल विभिन्न वाद्यों का अपने घोष में समावेश किया है, वरन् घोष की मूल संकल्पनाओं तथा रचनाओं का भारतीयकरण की दिशा में अनेक दृढ़ कदम बढ़ाए हैं। भारतीय रागों और तालों पर आधारित अनेक नवीन रचनाओं का निर्माण एवं प्रत्यक्ष प्रयोग किए हैं। इस प्रकार संघ ने घोष को भारतीय रागदारी के आधार पर सुगठित करने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है (घोष परिचय, 2005)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय शास्त्रीय धुनों को बजाने के लिए कुछ विदेशी वाद्ययंत्रों को पेश करके अपनी संगीत बैंड प्रतिभा प्रदर्शित करता है। जिसमें सैक्सोफोन (नागांग), क्लैरियोनेट (स्वरद) और यूफोनियम (गोमुख) और तुर्य (तुर्या) बजाए जाते हैं। स्वयंसेवकों द्वारा बजाए जाने वाले वर्तमान वाद्ययंत्रों में साइड ड्रम (आनक), बास ड्रम (पनव), बिगुल(शंख), बांसुरी(वंशी), त्रिकोण(त्रिभुज) और झांझ(झलरी) शामिल हैं। जिसके आधार पर संघ अपने घोष में गुणवाता लाने में निरंतर प्रयत्नरत रहता है। (10)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी शाखाओं में संगीतमय सामंजस्य विठाने, अपनी सभी शाखाओं में सैक्सोफोन, शहनाई और तुरही को शामिल करके अपने 'घोष तरंग', या घोष वादकों का विस्तार करने के लिए, जिसमें बास ड्रम, झांझ और बांसुरी बजाते हैं। यह भी ज्ञात होता है कि संस्थापक डा.के.बी. हेडगेवार ने पथ संचलन करने, अनुशासित और एकरूप बनाने और हिंदू समाज में एकता लाने के लिए घोष की शुरुआत की थी। घोष के स्वयंसेवकों को एक सुसंगत वादन पद्धति और समय का पालन करने के अलावा, उनके वाद्ययंत्रों को ट्यून करने, उन्हें बजाना सिखाया जाता है। (11)

भारतीय संगीत दुनिया को सत्य, करुणा और दिव्यता की ओर खींचता है। दुनिया भर में संगीत को मनोरंजन के साधन के रूप में देखा जाता है, जबकि हमारे देश में यह स्थापित परंपरा है कि संगीत को सत्य, करुणा और देवत्व के साधन के रूप में समझा जाता है। इसके साथ ही संघ की पद्धति और गतिविधियों में एक अभिन्न अंग के रूप में संगीत को शामिल किया गया है। यह कि ज्ञात होता है कि संगीत के सामूहिक श्रवण और प्रदर्शन से संस्कार बनते हैं। एक सामूहिक संगीत समाज में सामूहिक संस्कार और सद्भाव पैदा करता है। संगीत के द्वारा संघ का उद्देश्य पूरे समाज को एक करना है। (12)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में संगीत और व्यक्ति निर्माण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1925 से व्यक्ति निर्माण के कार्य में लगा हुआ है। एक गुणवान, चरित्र संपन्न, अनुशासित, शारीरिक व मानसिक रूप से हृष्ट- पुष्ठ व स्वस्थ, बौद्धिक रूप से भी परिपक्व तथा आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण व्यक्ति का निर्माण ही संघ कार्य का मुख्य अधिष्ठान है। नित्य प्रति की साधना के द्वारा ही यह कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में फलीभूत होता है। स्वयंसेवकों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए डॉ. हेडगेवार ने नागपुर में मोहिते के बाड़े में संघ की पहली दैनिक शाखा प्रारंभ की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसी शाखा व कार्य पद्धति के माध्यम से आज भी इसी व्यक्ति निर्माण के कार्य में जारी रखा हुआ है। सांघीकता, सामाजिक समरसता, सामूहिक जीवन शैली, नेतृत्व क्षमता का विकास, समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित व्यक्ति तैयार करना ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष का ध्येय होता है। सूचना व व्यवस्था का अक्षरश: पालन करना ही श्रेष्ठ व्यक्ति बनने का मार्ग है। जो व्यक्ति घोष की दिनचर्या तथा अनुशासन एवं व्यवस्था का पालन करते हुए अपना प्रशिक्षण पूरा करते हैं, वह समाज तथा अपने विविध कार्य क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभाने में अवश्य सफल होते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रखर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत ऐसी युवा पीढ़ी के निर्माण करने में ही सतत संलग्न है। शारीरिक, बौद्धिक, व्यवहारिक दृष्टि से परिपक्व कर समाज व देश के प्रति सर्वस्व समर्पण का भाव घोष से निर्माण होता है। सेना में रण घोष सैनिकों में सतत सक्रियता, उनमें नित्य उत्साह बना रहे इसी के लिए रणदुद्धवी सैनिकों में प्रेरणा स्फूर्ति, बलिदान देने के लिए सिद्ध होता है। भगवत गीता के पहले अध्याय के 12 से 19 श्लोकों में रणघोष का वर्णन मिलता है इसलिए रण संगीत का सेना के साथ अटूट संबंध रहा है। आज सभी देशों में मिलिट्री बैंड, राष्ट्रगीत, दैनदिन परेड, नैमित्तिक कार्यक्रम आदि देखने को मिलते हैं। इसलिए वीरश्री

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

से युक्त घोष का होना अति आवश्यक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भी इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए घोष को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में सम्मिलित किया गया है।

भारत का सांस्कृतिक गौरव व्यक्ति निर्माण के द्वारा संभव है। अत: दैनदिन शाखा, नित्य एकत्रीकरण, नैमित्तिक कार्यक्रम, वार्षिक शाखा उत्सव, कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग, नैसर्गिक संकटकालीन विविध सहायता कार्य, ऐसे अनेक उपक्रमों के द्वारा समाज सेवा कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 10 दशकों से चल रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कार्यकर्ताओं में प्रेरणा, उत्साह, स्फूर्ति व सांघीकता जैसे गुणों का विकास के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष को सीखने और सिखाने की योजना रहती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों का पथ संचलन अधिक परिणामकारी, अधिक सुंदर व सम्यक होने के लिए घोष रचनाओं का वादन स्वयंसेवकों में वीरश्री के गुणों का सृजन करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पथ संचलन व घोष केवल मनोरंजन के लिए नहीं है। यह तो एक प्रेरणा का संचार करता है। शरीर व मन को एक तारता में चलाता है तथा उत्साह का आह्वान करके स्वयंसेवकों में राष्ट्र सेवा की प्रेरणा व ऊर्जा प्रदान करता है। घोष ही एक विलक्षण व मधुर संगीत है।

संघ के निर्माता डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने प्रारंभ में स्वयंसेवकों के लिए कामठी मिलिट्री कॉन्टेनमेंट परिसर में सेना की शारीरिक कार्यक्रम व घोष आदि का निरीक्षण करने गए। उसी निमित्त स्वयंसेवकों में भी ऐसा एक वादक पथक तैयार हो। डॉक्टर हेडगेवार के मन में परिकल्पना आई। इसलिए एक ब्रास ड्रम लिया उसी से पहला पथ संचलन निकाला। नागपुर में एक भुरी नामक एक सेठ- ब्राह्मणों को भोजन करता था। उस ब्राह्मण भोजन की पंक्ति में स्वयंसेवक भी जाते थे। तब अंत में जो दक्षिणा में थोड़ा पैसा मिलता था उसी पैसे से बाद में पहला बिगुल खरीदा। श्री मार्तंड राव जोग पहले बिगुल वादक रहे और उनको सरसेनापती ऐसा संबोधन से जाना जाता था। धीरे-धीरे अन्य वाद्यों का संग्रहण प्रारंभ हुआ। तब एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी स्वयंसेवकों को सिखाने के लिए आता था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय वर्ष में वाद्यों को सिखाने के लिए स्वयंसेवक अपने-अपने प्रांत से तैयार होने प्रारंभ हुए। यह उपक्रम समस्त देश भर में वाद्य पथक पद्धति के रूप में विकसित होना प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में आनक वादन का अभ्यास धरती पर किया जाता है और Scout, We prepared, Marni, Velco, Forword, Col. Gogi, Flancy Bonce इत्यादि ब्रिटिश रचना सर्वत्र प्रचलित हो गई । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष के अनेक तज्ञ वादकों द्वारा साधना परक लंबा व रोचक इतिहास है। जिन्होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष की रचनाओं को भारतीय शास्त्रीय रागों व तालों के आधार पर निर्माण करके एक विशेष प्रकार का अनूठा प्रांगणीय रण संगीत व मार्शल संगीत का निर्माण किया है। मा. यादवराव 1962 में चीनी हमले के दौरान भारत के प्रथम सेना अध्यक्ष(सी.एन.सी.) जनरल करिअप्पा को भी संघ के संपर्क में लाये। वे संघ की देशभक्ति व अनुशासन के बारे में बहुत सुन चुके थे। एक बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पथ-संचलन(रूट मार्च) निकलना था। जनरल करिअप्पा ने मा. यादवराव जी से कहा कि मैं पथ-संचलन विशिष्ट स्थानों से देखना चाहूँगा। क्या प्रारम्भ से अंत तक सभी स्वयंसेवक समान रूप से अनुशासित रहते थे या कुछ ही समय के लिए? जनरल करिअप्पा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। जब उन्होंने स्वयं घड़ी की सुई पर पथ संचलन के स्टेपिंग, स्पीड, कन्टीन्यूटी, सीना आदि विभिन्न पक्ष सदैव की भांति सैनिकों के आधार पर खरे पाये। प्रारम्भ से अंत तक विभिन्न चौराहों व प्रमुख मार्गों से निकलकर मैदान तक अनुशासन के सूत्र में बंधे हुये 15 हजार स्वयंसेवकों के पथ-संचलन को देखकर सेनापति भाव-विभोर हुए बिना नहीं रह सके।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घोष विभाग भारतीय शास्त्रीय धुनों को बजाने के लिए विदेशी वाद्ययंत्रों में स्वदेशी शास्त्रीय संगीत प्रतिभा को भी प्रदर्शित करता है। जिसमें सैक्सोफोन (नागांग), क्लैरियोनेट (स्वरद) और यूफोनियम (गोमुख) और तुर्य (तुर्या) बजाए जाते हैं। वाद्ययंत्रों में साइड ड्रम (आनक), बास ड्रम (पनव), बिगुल (शंख), बांसुरी (वंशी), त्रिकोण (त्रिभुज) और झांझ (झलरी) आदि शामिल हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष विभाग ने 1970 के दशक में अपनी स्थापना के बाद से वर्षों से खुद को नया व अद्यतन कर लिया है, भारतीय शास्त्रीय संगीत राग-आधारित रचना बजाकर पथ संचलन व घोष के प्रदर्शन के कार्यक्रमों के माध्यम से भारी जनता की भीड़ को आकर्षित कर रहा है। ऐसे अनेक कार्यक्रमों की विशेषता व उदाहरण आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में देखने को मिलते हैं। कर्नाटकी और हिंदुस्तानी दोनों के राग बजाए जाते हैं तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कर्नाटकी और हिंदुस्तानी दोनों रागों में भारतीय संगीत पर आधारित घोष रचनाएँ विकसित की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ घोष शिविरों का आयोजन भी करता रहता है। जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष की गुणवत्ता को बढ़ाना, घोष रचनाओं के समग्र संगठन कार्यन्वयन को समझना, नए वाद्यों व नई रचनाओं को सीखना है। इसके अतिरिक्त एक स्वयंसेवक में गुणों को विकसित करने और शाखाओं को सुदृढ़ करने के लिए घोष सम्मलित किया जाता है तथा इस शिक्षण पर विशेष ध्यान भी केन्द्रित किया जाता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष का उद्देश्य स्वयंसेवकों में निरंतरता बनाए रखना है। ताकि अधिक से अधिक लोग संघ में शामिल होने के लिए प्रेरित हो तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी शाखाओं में संगीतमय सामंजस्य बिठाने के लिए भी उपयोग करता है। संघ के संस्थापक डा. के. बी. हेडगेवार ने पथ संचलन करने, अनुशासित और एकरूप बनाने और हिंदू समाज को संगठित करने के लिए घोष की शुरुआत की थी। प्रारम्भ के स्वयंसेवक ब्रिटिश पुलिस के बैंड को सुनने में घंटों बिताते थे। डा. हेडगेवार अपनी सोच में सबसे आधुनिक थे। शाखाओं में संगीत और वर्दी दोनों के लिए, उनकी पसंद यह दर्शाती है। 1974 के बाद घोष के हिस्से के रूप में बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों के लिए भारतीय नामों को अपनाया गया। घोष के स्वयंसेवकों को एक सुसंगत वादन पद्धति और समय का पालन करने के अलावा, उनके वाद्ययंत्रों को ट्यून करने, उन्हें बजाना सिखाया जाता है। वर्तमान में घोष के वाद्ययंत्रों में आनक, बास ड्रम (पनव), बिगुल (शंख), बांसुरी (वंशी), त्रिकोण (त्रिभुज) और स्ट्रिंग पर्क्यूशन के रूप में नामित किया है। घोष का उद्देश्य एक स्वयंसेवक के गुणों को विकसित करने और शाखाओं को मजबूत करने के लिए घोष को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कि कार्यपद्धति में शामिल किया गया है। घोष में बजाई गई रचनाएं ज्यादातर शास्त्रीय राग हैं, जिन्हें अंत में देशभक्ति गीतों के साथ वाद्ययंत्रों के अनुकूल बनाया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत भी यही कहते हैं कि भारतीय संगीत दुनिया को सत्य, करुणा और दिव्यता की ओर खींचता है। दुनिया भर में संगीत को मनोरंजन के साधन के रूप में देखा जाता है, जबकि हमारे देश में यह स्थापित परंपरा है कि संगीत को सत्य, करुणा और देवत्व के साधन के रूप में समझा जाता है। संगीत सामंजस्य स्थापित करता है तथा संगीत की इस विशेष गुणवत्ता के कारण ही संघ ने स्थापना के प्रारंभिक वर्षों से ही घोष को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पद्धति और गतिविधियों में एक अभिन्न अंग के रूप में शामिल किया गया है। संगीत के सामूहिक श्रवण और प्रदर्शन से संस्कार बनते हैं। एक सामूहिक संगीत समाज में सामूहिक संस्कार और सद्भाव पैदा करता है। संगीत के द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य पूरे समाज को एक करना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष वादक को उसके प्रयासों के लिए कोई वेतन नहीं मिलता है। ये स्वयंसेवक विविध आयु समूहों, विविध सामाजिक पृष्ठभूमि और विविध व्यक्तिगत आदतों से आते हैं। संगीत उनका पेशा नहीं होता है। लेकिन उसके बाबजूद भी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

स्वयंसेवकों के ऐसे विविध समूह से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक सामंजस्यपूर्ण सिम्फनी विकसित करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक कार्यक्रम के लिए समाज की सेवा और एक अद्भुत धुन तैयार करने के लिए अपनी जेब से पैसा खर्च करते हैं। संघ के स्वयंसेवक अपने मनोरंजन या प्रसिद्धि के लिए नहीं बल्कि राष्ट्र की सेवा के लिए संगीत तैयार करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों में यह भावना प्रबल बन जाती है कि "राष्ट्र हमें बहुतायत में देता है, हमें भी राष्ट्र की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए तथा हमें जो कुछ भी विद्या के रूप में मिला है, हम उसे फिर से राष्ट्र की सेवा में लगाते हैं"। संघ में पहला संस्कार निस्वार्थ भाव से देना व सीखना है। दुनिया की गलत धारणा थी कि भारतीय संगीत सामाजिक समारोहों में मनोरंजन के लिए या संगीत समूहों में प्रदर्शन के लिए उपयुक्त था। लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसे शौर्य, शक्ति और वीरता के लिए भी उपयोगी माना। अपने देश में सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित मार्शल संगीत रूप की कोई जीवित परंपरा नहीं थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ घोष के रूप में अपने देश में पास मार्चिंग के लिए एक भारतीय शास्त्रीय संगीत रूप के रूप में नई संगीत परंपरा प्रारम्भ की।

प्रांम्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ऐसी रचनाएँ अंग्रेजों से उधार ली। इस तरह के रूपों के साथ अनुभव विकसित करने के बाद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगीत के तज्ञ स्वयंसेवकों ने भारतीय रागों पर आधारित रचनाएँ विकसित की। आज भारतीय परंपराओं के रागों और तालों पर आधारित धुनों की रचनाओं का एक भंडार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष में है। विश्व के कोने-कोने से तरीकों को स्वीकार करना भारतीय परंपराओं में एक स्थापित सिद्धांत है। परन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि हम उनके अधीन नहीं होते हैं। घोष से एक महत्वपूर्ण गुण भी विकसित होता है वह है आत्म अनुशासन का है। घोष के साथ संचलन में समूह का कोई भी प्रतिभागी स्वयंसेवक समूह से कदम नहीं तोड़ता है। प्रतिभागी स्वयंसेवक वैसा प्रदर्शन करते जैसा कि अपेक्षित है। स्वयंसेवक को पूरे समूह के साथ तालमेल बिठाकर प्रदर्शन करना होता है। इसलिए संगीत आत्म अनुशासन व समरसता के संस्कार का स्रोत है। सुर और ताल को एक साथ मिलाने पर ही संगीत का निर्माण होता है और उस संगीत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना आत्म अनुशासन के गुण को अधिक प्रगाढ़ करता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य भारत को विश्व गुरु के रूप में पुनर्स्थापित करना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्पष्ट सिद्धान्त है कि हम सब हिंदू हैं और भारत एक हिंदू राष्ट्र है। और यह हिंदू कोई सांप्रदायिक या जातीय नाम नहीं है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का का मानना है कि हमारा नाम इसलिए पड़ा क्योंकि हम "वसुधैव कुटुम्बकम" के सिद्धांत में विश्वास करते हैं और पूरी दुनिया को अपना परिवार मानते हैं। दुनिया भर के राष्ट्रों की विभिन्न सांप्रदायिक पहचान हैं। अकेले अखंड भारत की पहचान हिंदू राष्ट्र के रूप में की जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम पूरी दुनिया की भलाई की घोषणा करते हैं और चाहते हैं। इसलिए पूरी दुनिया से आत्मीयता होना हमारे लिए स्वाभाविक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य समानता है। दुर्भाग्य से समाज ने एक-दूसरे को जाति के चश्मे से देखना शुरू कर दिया और छुआछूत का भी अभ्यास किया। इस वजह से हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग पीछे छूट गया है। इन बुराइयों को खत्म करने की सख्त जरूरत है। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर चाहते थे कि हमारे देश में स्वतंत्रता और सद्भाव दोनों एक साथ आए और उन्होंने जोर देकर कहा कि इसके लिए समानता एक प्राथमिक आवश्यकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह भी विचार है कि भातृभाव और सद्भाव मानवता की अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इन उद्देश्यों के लिए संगीत की क्षमता को पहचानता है और इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने मार्शल संगीत की प्रथा को अपनाया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष जब बजता है तो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में वाद्यों के प्रकार के बारें में सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य बजाए जाते हैं।

1.सुषिर वाद्य:- सुषिर वाद्य फूँककर बजाए जाते हैं। इनमें वंशी, नादस्वर, शहनाई, स्वरद आदि वंशीज़ वाद्य तथा शंख, श्रृंग, प्रतूर्य, गोमुख, पौंड्र, वेणु आदि शंखज वाद्यों का समावेश होता है। कंपित पति, अवरुद्ध वायु आदि के कारण इनमें से ध्वनि उत्पन्न होती है। मुंह में डालकर बजाए जाने वाले वाद्य 'वंशीज़', तथा होंठों पर रखकर बजाए जाने वाले वाद्य 'शंखज' कहलाते हैं।

2.अवनद्ध वाद्य:- इसे चर्मवाद्य भी कहा जा सकता है। इनमें आनक, पणव, तबला, मृदंग, खर्जानक, पखावज, चंडे, ढ़ोल आदि का समावेश होता है। ताने हुये चर्म अथवा प्लास्टिक आवरण पर हाथ अथवा सारिका से आघात करने से इन वाद्यों में ध्वनि उत्पन्न होती है।

3.घन वाद्य:- धातु के वाद्य, जैसे त्रिभुज, झल्लरी, घंटा आदि का इसमें समावेश होता है। नादकारक धातु पर आघात करने से इन वाद्यों में कंपन तथा उसके फलस्वरूप ध्वनि निर्माण होती है।

4. तत वाद्य:- अर्थात तंतुवाद्य। ताने हुये तार में कंप तथा उससे ध्वनि उत्पन्न होती है। इसमें सितार, सारंगी, वीणा, वायोलिन, संतूर आदि का समावेश होता है। तत वाद्यों का प्रयोग घोष में नहीं होता, क्योंकि वे नाजुक होते हैं तथा इन वाद्यों की आवाज दूर तक नहीं जाती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की घोष रचना मुख्यत चुने हुए 25 रागों पर आधारित हैं। वे हैं राग शंकरा, मालकौंस, शुद्ध कल्याण, पटदीप, मियां मल्हार, हंसध्वनि, हिंडोल, जोग, भटियार, विभास, विलास खानी तोड़ी, अल्हैया बिलावल, मध्यमांद सारंग, बागेश्री, वृंदावनी सारंग, कलावती, चारुकेसी, यमन, खमाज, छायानट, दुर्गा, हमीर, किरवानी, पूरिया धनाश्री, भीमपलास, दरबारी कान्हडा, काफी, भूप, भैरवी, चंद्रकौंस, भूपश्री, गावती, सारंग और मारवा यह सारी रचनाएं संघ घोष में प्रदीप्त है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों का विश्वास है कि घोष से ना केवल आत्मविश्वास बढ़ेगा बल्कि अपने यूयुत्स वृति भी बृद्धिगत होगी और इसका प्रभाव यज्ञ सा छाया रहेगा। घोष का उद्देश्य पूरे भारत से आने वाले प्रतिभागियों स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देकर घोष की गुणवत्ता में वृद्धि करना है तथा घोष पथक की गुणवत्ता को बढ़ाना, नए वाद्यों और रचनाओं को सीखना और घोष की पवित्रता को समझना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना काल से ही व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के ध्येय को लेकर आगे बढ़ रहा है। घोष के माध्यम से निरंतर संस्कारित, अनुशासनबद्ध एवं प्रखर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत युवा पीढ़ी का निर्माण हो रहा है जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर अपनी विशेष छाप छोड़ रहे हैं।

प्रशिक्षित व्यक्ति ही "हिंदू जगे तो देश जगेगा" के भाव को और भी पुष्ट बनाने में सक्षम होंगे। व्यक्ति को अनुशासन के प्रति पूरी तरह से सजग करते हुए संघ की व्यवस्था में ढलकर जो निकलेगा वही परिपक्व व्यक्ति सांघीकता अर्थात सब के साथ, एक साथ कार्य करने का गुण, सामाजिक समरसता अर्थात सबके साथ बिना किसी भेदभाव से व्यवहार, सामूहिक जीवन शैली अर्थात सामूहिक रूप से जीवन जीने का पद्धति, नेतृत्व क्षमता का विकास, समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर एक सशक्त व्यक्ति बनेगा। व्यक्ति निर्माण का सबसे बड़ा केंद्र संघ की नित्य लगने वाली शाखा है। शाखा के माध्यम से संस्कार, सांघीकता, अनुशासन, सेवा, नेतृत्व क्षमता, समरसता, सामूहिक जीवन शैली, समर्पण तथा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत होता है| संघ की शाखा में घोष केंद्र के रूप में घोष सिखते-सिखते ये गुण सहज रूप से विकसित होते जाते हैं। अत: नर से नारायण का निर्माण वास्तव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घोष करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में स्वयंसेवकों में गुणों के विकास को ध्यान में रखते हुए घोष को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में सम्मिलित किया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि भारत का सांस्कृतिक गौरव व्यक्ति निर्माण के द्वारा संभव है। अत: दैनदिन शाखा, नित्य एकत्रीकरण, नैमित्तिक कार्यक्रम, वार्षिक शाखा उत्सव, कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग, नैसर्गिक संकटकालीन विविध सहायता कार्य, ऐसे अनेक उपक्रमों के द्वारा समाज सेवा कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विगत 10 दशकों से चला रहा है। इन सब कार्यों के लिए कार्यकर्ताओं में प्रेरणा, उत्साह, स्फूर्ति व सांघीकता जैसे गुणों का विकास के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष को सीखने और सिखाने की योजना रहती है जिसका उद्देश्य स्वयंसेवकों का पथ संचलन अधिक परिणामकारी, अधिक सुंदर व सम्यक होने के लिए घोष रचनाओं का उत्कृष्ट वादन व स्वयंसेवकों में वीरश्री के गुणों का सृजन करना है। सभी वाद्यों की पृथक-पृथक रचनाएं बजाकर स्वयंसेवक कर्णप्रिय रण संगीत एवं वृंद संगीत का निर्माण करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोष विभाग में वाद्यों में प्रणव (Base Drum), आनक (Side Drum), शंख (Bugle), तूर्य (Trumpet), गोमुख (Euphonium), स्वरद (Clarinet), नागांग (Saxophone) वंशी सीधी, वंशी आड़ी(वेणु), त्रिभुज, झलरी, घंटा आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

घोष हमेशा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पथ संचलन में लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। जो व्यक्ति घोष की दिनचर्या तथा अनुशासन एवं व्यवस्था का पालन करते हुए अपना प्रशिक्षण पूरा करते हैं, वह समाज तथा अपने विविध कार्य क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभाने में अवश्य सफल होते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रखर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत ऐसी युवा पीढ़ी के निर्माण करने में ही सतत संलग्न है। शारीरिक, बौद्धिक, व्यवहारिक दृष्टि से परिपक्व कर समाज व देश के प्रति सर्वस्व समर्पण का भाव घोष से ही होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना काल से ही व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के ध्येय को लेकर आगे बढ़ रहा है। घोष के माध्यम से निरंतर संस्कारित, अनुशासनबद्ध एवं प्रखर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत युवा पीढ़ी का निर्माण हो रहा है जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर अपनी विशेष छाप छोड़ रहे हैं। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति में घोष को स्वयंसेवकों में उत्साह, उमंग, सांघीकता व वीरता जैसे गुणों के विकास के लिए तथा स्वयंसेवकों की दृढ़ इच्छा शक्ति, लगन, समाज व राष्ट्र के प्रति भक्ति भावना व कर्तव्य परायणता के निमित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शारीरिक विभाग में घोष का महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ

1. Chowdhary, Subhadra. (2000). Sangeet Ratnakar, Pt. Sharangdev. Radha Publications, New Delhi.
2. Acharya, Pt. Shri Ram Sharma. (1995). शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म. Akhand Jyoti Sansthan, Mathura.
3. Sharma, Dr. Mritunjay. (2009). भारतीय संगीत में अध्यात्मिक तत्व. Department of Music, H.P.University, Shimla.
4. Vanhadpande, B.N. (1995). संघ कार्यपद्धति का विकास. Shree Bharti Publications, Nagpur.

5. Dwivedi, Vireshwar. (1992). यशस्वी यदावराव जोशी. Lokhit Prakashan, Lucknow.
6. Unknown. (2000). घोष शिक्षण विधि. Sahitya Sangam, Bengaluru
7. Tripathi, Dr. Prakash. (2022). डॉ हेडगेवार: व्यक्ति एवं विचार. Prabhat Prakashan, New Delhi.
8. Sinha, Rakesh. (2016). आधुनिक भारत के निर्माता: डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India
9. Unknown. (2015, December 25). RSS musical band to play Indian classical tunes on foreign instruments. Retrieved on December 13, 2021 at 12:03 AM IST https://www.deccanherald.com/content/519477/rss-musical-band-play-indian.html
10. Unknown. (2015, December 23). RSS Akhil Bharatiya Shrunga Ghosh Shibir 'SWARANJALI' to be held on January 7-10, 2016 at Bengaluru. Retrieved on December 12, 2021 at 12:10 AM IST https://samvada.org/2015/news/shrunga-ghosh-shibir-swaranjali/)
11. Unknown. (2020, October 01). How RSS band plans to bring more 'harmony' in its fold. Retrieved on October 13, 2021 at 10:04 PM IST https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/how-rss-band-plans-to-bring-more-harmony-in-to- its-fold/articleshow/50145162.cms)
12. Rashtriya Swayamsevak Sangh. (2017, November 08). Bharatiya Classical music draws the world to truth, compassion and divinity. Retrieved on December 12, 2021 at 11:27 PM IST https://www.rss.org/Encyc/2017/11/8/Swara-Govindam.html)
13. Sharma, Dr. Mritunjay and Kumar, Bhumesh (2013). यौगिक चक्र एवं संगीत. Swara Sindhu, 01(01), 01–04.